16 कुंडलियाँ

एक समय था जब कवि नीति संबंधी ज्ञान को काव्य-विधा के कुंडली छंद में पिरोया करते थे। गिरिधर कविराय ने इन कुंडलियों के माध्यम से कहा है कि दौलत पाकर अभिमान नहीं करना चाहिए। समाज में और संसार में किसी के गुण ही उसे मान-सम्मान दिलाते हैं। कोई भी काम शुरू करने से पहले उसके बारे में हर तरह से विचार कर लेना चाहिए। ऐसा न करने पर कई बार पछताना पड़ जाता है।

दौलत पाय न कीजिए, सपने हू अभिमान।
चंचल जल दिन चारिको, ठाउँ न रहत निदान॥
ठाउँ न रहत निदान, जियत जग में जस लीजै।
मीठे बचन सुनाय, विनय सबही की कीजै॥
कह 'गिरिधर कविराय' अरे यह सब घट तौलत।
पाहुन निसिदिन चारि, रहत सबही के दौलत॥

गुन के गाहक सहस नर, बिनु गुन लहै न कोय।
जैसे कागा कोकिला, सबद सुनै सब कोय॥
सबद सुनै सब कोय, कोकिला सबै सुहावन।
दोऊ को इकरंग, काग सब भये अपावन॥
कह 'गिरिधर कविराय' सुनो हो ठाकुर मन के।
बिनु गुन लहे न कोय, सहस नर गाहक गुन के॥

बिना विचारे जो करै, सो पाछे पछिताय।
काम बिगारे आपनो, जग में होत हँसाय॥
जग में होत हँसाय, चित्त में चैन न पावै।
खान पान सनमान, राग रंग मनहिं न भावै॥
कह 'गिरिधर कविराय' दुख कछु टरत न टारे।
खटकत है जिय माँहि, कियो जो बिना बिचारे॥

—गिरिधर

Copyrighted

कवि परिचय : 18वीं सदी में जन्मे गिरिधर कविराय का मूलनाम हरिदास भाट अथवा ब्रह्मभट्ट था। ऐसा अनुमान है कि गिरिधर पंजाब के रहनेवाले थे किंतु बाद में इलाहाबाद के आसपास आकर रहने लगे। इन्होंने कुंडलियों में ही समस्त काव्य रचा जिनकी भाषा अवधी और पंजाबी है। ये अधिकतर नीति विषयक हैं। *गिरिधर कविराय ग्रंथावली* में इनकी पाँच सौ से अधिक कुंडलियाँ संकलित हैं।

पाठ मूल्यांकन

अभ्यास

शब्दार्थ

हू – में भी; **ठाउँ** – पास, ठिकाना; **पाहुन** – मेहमान/अतिथि; **चारि** – चार; **सुहावन** – अच्छा लगना; **अपावन** – अपवित्र; **सहस** – सहस्र, हज़ारों; **चित्त** – हृदय/मन; **टरत न टारे** – टालने से भी नहीं टलता

कविता-बोध

मौखिक

प्रत्येक 1 अंक

1. कुंडलियों का लययुक्त एवं सस्वर वाचन कीजिए।
2. **सहस नर** किसके गाहक होते हैं और क्यों?
3. जग में हँसाई क्यों होती है?
4. दौलत पाते ही लोग घमंडी क्यों हो जाते हैं? M.I.

लिखित

लघुउत्तरीय प्रश्न Short Answer Questions

प्रत्येक 1 अंक

ठाउँ न रहत निदान, जियत जग में जस लीजै।
मीठे बचन सुनाय, विनय सबही की कीजै॥

क. ठाउँ न रहत निदान का क्या अर्थ है?

.....

ख. कवि ऐसा क्यों कह रहे हैं?

.....

Skills/Learning on this Page: • **Word Power** • **Verbal Expression** – melodious singing, M.I.
• **Comprehension** – reasoning, Short answer questions
• **जीवन-मूल्य** - नैतिकता, मधुर वाणी, धन की उपयोगिता और निस्सारता, सोच-समझकर कार्य करना

Copyrighted m

दीर्घउत्तरीय प्रश्न Long Answer Questions

प्रत्येक 2 अंक

1. पहले पद में कवि ने क्या संदेश देना चाहा है ?
2. कवि धन से भी ज़्यादा किसे महत्त्वपूर्ण मानता है और क्यों ?
3. **ऐसा क्यों कहा गया ?**

   क. चंचल जल दिन चारिको, ठाउँ न रहत निदान ॥

   ख. दोऊ को इकरंग, काग सब भये अपावन ॥

   ग. खान पान सनमान, राग रंग मनहिं ना भावै ॥
4. आपके अनुसार किसी भी काम को करने से पहले क्या विचार करना चाहिए ? HOTS *4 अंक*
5. सफलता गुणों से मिलती है या भाग्य से ? अपने विचार लिखिए। M.I. *4 अंक*

व्याकरण-बोध

उचित हिंदी पर्याय पर सही का निशान लगाइए— *प्रत्येक ½ अंक*

क. गुन

i. गुड़ ☐ ii. गुण ☐

iii. गुढ़ ☐ iv. गान ☐

ख. सहस

i. सहस्त्र ☐ ii. हज़ार ☐

iii. साहस ☐ iv. हास्य ☐

ग. चारि

i. नौकर ☐ ii. चरना ☐

iii. चार ☐ iv. चारा ☐

घ. निसिदिन

i. रातदिन ☐ ii. निसकर ☐

iii. सुबह ☐ iv. प्रात:काल ☐

ङ: गाहक

i. गहाक ☐ ii. खरीददार ☐

iii. ग्राहक ☐ iv. बेकार ☐

च. कछु

i. कछुआ ☐ ii. कुछ ☐

iii. थोड़ा ☐ iv. ज़्यादा ☐

छ. सबही

i. कभी ☐ ii. जभी ☐

iii. सभी ☐ iv. तभी ☐

ज. सनमान

i. श्मशान ☐ ii. समान ☐

iii. सम्मान ☐ iv. इज़्ज़त ☐

Skills/Learning: • Short and Long answer questions, comprehension, message of the poem, reasoning, explanation, inner meaning of कुंडली, HOTS, M.I. • **Language –** synonyms

Copyrighted mate